Ques: Define Diagnosis and discuss its functions.

निदान की परिभाषा दें तथा निदान के कार्यों का वर्णन करें।

Ans:

Diagnosis (निदान) शब्द ग्रीक भाषा से लिया गया है जिसका अर्थ होता है 'पूर्ण रूप से समझना' (Thorough Understanding)। लेकिन व्यक्ति तथा उसकी समस्या को समझने के लिए विभिन्न चिकित्सक अलग-अलग दृष्टिकोण अपनाते हैं। सच पूछें तो नैदानिक मनोविज्ञान ने इस शब्द को चिकित्सा विज्ञान (medicine) से प्राप्त किया है। medicine में इसका अर्थ होता है 'रोगी के लक्षणों के आधार पर उसकी समस्याओं को पहचानना और रोग का नाम देना'।

विभिन्न नैदानिक मनोवैज्ञानिकों ने इसे अपने-अपने ढंग से परिभाषित किया है। James Drever के अनुसार — "निदान का अर्थ असामान्यता, विकृति या रोग के स्वरूप को निर्धारित करना है।" CHAPLIN का विचार है कि — "निदान का अर्थ असामान्यता या रोग के स्वरूप के निर्धारण से है। इसका अर्थ रोग या असामान्यता के आधार पर एक व्यक्ति के वर्गीकरण से है।"

यदि हम नैदानिक मनोविज्ञान के इतिहास पर दृष्टि डालें तो पता चलेगा कि निदान के अर्थ में समय-समय पर परिवर्तन होता रहा है। प्रारम्भ में जब नैदानिक मनोवैज्ञानिक मनोचिकित्सक के सहायक के रूप में कार्य करते थे उस समय उनका नैदानिक कार्य लक्षण के आधार पर व्यक्ति को किसी एक रोग-श्रेणी में विभाजित करना होता था। मनोचिकित्सक (Psychiatrist) द्वारा प्रस्तुत मानसिक रोग के वर्गीकरण को आधार मानते हुए रोग के लक्षणों का अध्ययन किया जाता था और उसे किसी एक रोग-श्रेणी में रख दिया जाता था। इस प्रकार के निदान को 'वर्गीकरण के आधार पर' निदान की संज्ञा दी जा सकती है। परन्तु नैदानिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में अध्ययन एवं अनुसंधान होने के बाद जब व्यक्तित्व की गतिकी तथा मानसिक स्वास्थ्य एवं रोग के सम्बन्ध में ज्ञान में वृद्धि होती गयी तब नैदानिक अध्ययन के अर्थ और उद्देश्य में भी परिवर्तन आता गया। अब व्यक्ति तथा उसकी समस्या को समझने के लिए उसके व्यक्तित्व के मूल्यांकन पर अधिक बल दिया जाने लगा।

Scanned with CamScanner

Answer 4: निदान के निम्नलिखित मुख्य कार्यों का उल्लेख किया है।

1. आधारिक सूचना का संग्रहण : निदान का एक महत्वपूर्ण कार्य रोगी तथा उसकी बीमारी के संबंध में विभिन्न आधारभूत सूचनाएँ प्राप्त करना। इस प्रकार की सूचनाओं का महत्व दो आधार पर होता है। पहला, रोगी के रोग को पहचानने तथा किसी निश्चित श्रेणी में रखने में सहायता प्रदान करना तथा दूसरे, इन सूचनाओं या आँकड़ों की तुलना रोगी के उपचार के बाद प्राप्त होने वाली सूचनाओं या आँकड़ों के साथ करना।

2. सहायक सूचनाओं का संग्रहण : चिकित्सक निदान के समय आधारिक सूचना के साथ-साथ कुछ संपूरक सूचनाएँ भी एकत्र करता है। संपूरक या सहायक सूचना का अर्थ ऐसी सूचनाओं से है जो आधारिक सूचना के अतिरिक्त होती है। इस कार्य के लिए प्रायः व्यक्ति अध्ययन विधि (case study method) का सहारा लिया जाता है।

3. पूर्वानुमान करना : रोगी के संबंध में पूर्वानुमान (Prediction) लगाना भी निदान का एक महत्वपूर्ण कार्य होता है। रोगी के संबंध में मनोचिकित्सक विभिन्न प्रकार के पूर्वानुमान लगाते हैं। जैसे, क्या रोगी को अब चिकित्सालय से मुक्त कर दिया जाए? क्या रोगी का समायोजित जीवन बिताने लायक हो गया है? आदि।

4. संघर्ष तथा अहम् रक्षा (Ego defence) का अध्ययन : निदान के माध्यम से मनोचिकित्सक को रोगी के संघर्षों (conflicts) का पता चल जाता है। निदान के माध्यम से यह पता लगाया जाता है कि रोगी अपने संघर्षों के समाधान के लिए किन-किन अहम् रक्षा का उपयोग करता है। इससे मनोचिकित्सक को रोगी के उपचार में सहायता मिल जाती है।

5. व्यक्तित्व संरचना तथा गतिकी का अध्ययन : निदान द्वारा मनोचिकित्सक को रोगी के व्यक्तित्व की संरचना तथा गतिकी (dynamics) का भी पता चल जाता है। मनोचिकित्सक रोगी से संबंधित प्राप्त आँकड़ों एवं सूचनाओं के आधार पर रोगी के व्यक्तित्व की संरचना एवं गतिकी को अच्छी तरह जान लेता है जिससे रोगी के उपचार के लिए अनुकूल योजना का निर्माण करने में वे सफल होते हैं।

6. उपयुक्त चिकित्सा विधि का चयन : आधारिक एवं संपूरक सूचना संग्रह कर लेने के बाद मनोचिकित्सक को रोगी की समस्या

Scanned with CamScanner

का ज्ञान हो जाता है। मनोचिकित्सक इसके बाद रोगी के उपचार के लिए चिकित्सा विधि का चुनाव करने लगता है। वह यह निर्णय लेता है कि रोगी की समुचित चिकित्सा के लिए व्यवहार चिकित्सा, मनोविश्लेषण, समूह चिकित्सा आदि में से किस विधि का उपयोग करे।

7. चिकित्सा हस्तक्षेप की योजना: निदान का एक महत्वपूर्ण कार्य चिकित्सा हस्तक्षेप की योजना बनाना है। रोगी से सम्बन्धित आँकड़ों या सूचनाओं के आधार पर रोगी का मूल्यांकन कर केवल चिकित्सा का ही चुनाव नहीं किया जाता, बल्कि चिकित्सा की कार्य प्रणाली की योजना भी बनाई जाती है। जैसे, चिकित्सा प्रारम्भ कब की जाए, चिकित्सा का वातावरण कैसा हो? आदि।

8. प्रशासनिक एवं वैधानिक उत्तरदायित्व: निदान द्वारा केवल रोगी के उपचार में ही सहायता नहीं मिलती बल्कि नैदानिक मनोवैज्ञानिक अपने प्रशासकीय और वैधानिक दायित्व को पूरा करने में भी इसका लाभ उठाते हैं। वे निदान के आधार पर रोगी से सम्बन्धित व्यवहार और वातावरण का भी निर्धारण करते हैं।

9. उपचारोत्तर मूल्यांकन: निदान का एक महत्वपूर्ण कार्य रोगी के उपचार के बाद मूल्यांकन करना भी है। उपचारोपरान्त मनोचिकित्सक यह देखने का प्रयास करता है कि रोगी में पहले की अपेक्षा सुधार हुआ है या नहीं? यदि सुधार संतोषप्रद नहीं हुआ है तो आगे उसका उपचार पूर्ववत जारी रखें या अन्य चिकित्सा विधि का सहारा लिया जाए? आदि।

10. उत्तरवर्ती क्रिया (Follow up action): मनोचिकित्सक का उत्तरदायित्व केवल रोगी का उपचार कर लेना ही नहीं है बल्कि वह रोगी के सम्बन्ध में तब तक जानकारी रखता है जब तक कि रोगी स्वतंत्र जीवन जीने लायक नहीं बन जाता है। कभी-कभी रोगी में पूर्व लक्षण फिर से विकसित हो जाते हैं, ऐसी स्थिति में चिकित्सक का उत्तरदायित्व और अधिक बढ़ जाता है। उसे रोगी के निदान की सम्पूर्ण प्रक्रिया पुनः दोहरानी पड़ जाती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि मानसिक रोग के उपचार में निदान अधिक महत्वपूर्ण है। सही निदान ही समुचित उपचार का आधार है। जब भी कोई रोगी नैदानिक मनोवैज्ञानिक के पास सहायता के लिए आता है या लाया जाता है, तब सबसे पहले समस्या का कारण पता लगाया

Scanned with CamScanner

जाता है रोगी की समस्या के स्वरूप और कारणों को समझना ही निदान कहलाता है। अतः निदान नैदानिक मनोविज्ञान की महत्वपूर्ण समस्या है जिसका उद्देश्य रोगी की समस्याओं के स्वरूप एवं कारणों को समझना है। नैदानिक मनोविज्ञान निदान के लिए रोगी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का मूल्यांकन करता है। जहाँ तक निदान के कार्यों का सवाल है, WATSON के शब्दों में हम कह सकते हैं कि — "The functions of diagnosis are assuring all relevant informations from the available sources, analysing these data and planning for the future." (निदान का कार्य सभी उपलब्ध स्त्रोतों से उपयोगी सूचनाएं प्राप्त करना, उन सूचनाओं का विश्लेषण करना तथा भविष्य के लिए योजना बनाना है)

27/2/2020